हमारा सबसे बड़ा आधारभूत अुद्योग

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ — सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई — अंक १६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १८ जून, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

भूदानमें साध्य और साधन

अहिंसक समाज-योजनामें हमें साध्य और साधनोंके स्पष्टीकरणमें हमेशा बड़ी सावधानी रखनी चाहिये। साध्यका थोड़ा भी अनुचित आग्रह हुआ कि अुससे आसक्ति पैदा होगी और आसक्ति पैदा हुअी तो हिंसा भी जागेगी। चूंकि भूदान-आन्दोलन सर्वोदय समाजकी स्थापनाके लिअे किया जा रहा प्रयत्न है अिसलिअे हमें अुसके अुत्पादक अवयवोंको बहुत सावधानीके साथ समझ लेना चाहिये, अुसके साध्यों और साधनोंका विश्लेषण करना चाहिये और अुनके प्रति अपने मनोभावके बारेमें खूब सचेत रहना चाहिये।

भूदानके साध्यों और साधनोंका वर्गीकरण अिस प्रकार किया जा सकता है:

(१) आर्थिक — साध्य : गरीबीका निवारण
साधन : जमीनका समुचित अुपयोग और अुत्पादन

(२) सामाजिक — साध्य : मालिकीका हक समाजको सौंपना
साधन : जमीनका पुनर्वितरण

(३) राजनीतिक — साध्य : जमीनका शांतिपूर्ण हस्तांतरण
साधन : विचार-प्रचारके जरिये लोगोंकी दृष्टि और अुनके हृदयका परिवर्तन

साध्यमें स्पष्टताकी आवश्यकता है और साधनोंमें पवित्रताकी। जब तक हम समुचित साधनोंका अुपयोग करते रहेंगे, तब तक साध्योंमें गड़बड़ नहीं होगी।

अिसलिअे यहां हम अपना सारा विचार साधनों पर ही केन्द्रित करेंगे।

१. गरीबीका निवारण जमीनका समुचित अुपयोग करके ही किया जा सकता है। जब हम निर्यात या मिलोंके लिअे अुत्पादन करने लगते हैं, तो हम बेकारी पैदा करते हैं और गरीबी तथा कष्टकी वृद्धि करते हैं। अिसलिअे हमें स्वावलंबन और स्वयंपूर्णताकी दृष्टिसे स्थानीय अुपयोगके लिअे ही अुत्पादन करना चाहिये। किसानों और कार्यकर्ताओंको अिस कार्यक्रमके ब्यौरेकी तालीम देनेके लिअे हमें कृषि-विद्यालयों और प्रदर्शन-केन्द्रोंकी (demonstration centres) की तीव्र आवश्यकता है।

२. अभी खेतीकी जमीनके क्षेत्रमें वैयक्तिक मालिकीका नियम चलता है। अिसे हमें बदलना है। छोटी या बड़ी किसी भी तरहकी खानगी मालिकी होनी ही नहीं चाहिये। ज्यादा जमीनवालोंसे जमीन ली जाय और फिर वह छोटे-छोटे टुकड़ोंमें किसानोंको व्यक्तिशः बांट दी जाय, यह बात ठीक नहीं है। जमीन जमीन जोतनेवालोंको अेक निश्चित अवधिके लिअे ही दी जानी चाहिये और अिस बातकी जांच होनी चाहिये कि अुन्होंने कैसा काम किया। अिस कदमकी सफलताके लिअे भी कृषि-विद्यालयोंके जरिये कार्यकर्ताओंको तालीम देना आवश्यक होगा।

३. विचार-प्रचारके जरिये हमें जमीनका हस्तान्तरण शान्तिपूर्वक कर सकना चाहिये। लोगोंको समझाने और अुनके हृदयको प्रभावित करनेके लिअे हमें कार्यकर्ताओंकी आवश्यकता है। अिस अुद्देश्यकी सिद्धिमें हमारा साधन हमारे तालीम पाये हुअे कार्यकर्ता ही हैं। यहां भी कृषि-विद्यालयोंकी स्थापनाकी आवश्यकता महसूस होती है।

अिस संक्षिप्त विश्लेषणसे हम अिस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि हमारा सारा ध्यान कार्यकर्ताओं, अुनकी तालीम और तैयारी पर केन्द्रित करना चाहिये। अिसके बजाय अगर हमने अुसे समय और परिमाण पर केन्द्रित किया, यानी यह आग्रह रखा कि अितने समयमें अितना काम हो ही जाना चाहिये, तो अुससे हिंसाकी प्रवृत्ति पैदा होगी। लक्ष्य निर्धारित करना हिंसात्मक आयोजनका अंग है।

चूंकि हमारे कार्यका साधन कार्यकर्ता ही हैं अिसलिअे हमारी मुख्य समस्या अुन्हें ढूंढ़नेकी है। मौजूदा संस्थाओंमें जो कार्यकर्ता काम कर रहे हैं अुन्हें ही निकालकर भूदानके काममें नियुक्त कर दिया जाय, अैसा नहीं होना चाहिये। वह हिंसा होगी।

अिस बातको स्पष्ट करनेके लिअे मैं अेक-दो बड़े अुदाहरण देता हूं कि किस तरह भावनाके आवेगमें कार्यकर्ताओंने अपना कर्तव्य कार्य — जिसमें वे नियुक्त थे — छोड़ दिया और भूदानको मौजूदा आवश्यकता मानकर अुसमें लग गये। (मैं आशा करता हूं कि जिनके अुदाहरण मैं यहां दे रहा हूं, वे मुझे माफ कर देंगे।) जीवनदानकी मांग पर श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम् तुरन्त ही सद्भावपूर्वक आगे आयीं और अुन्होंने अपनी सेवायें भूदानको अर्पित कर दीं। प्रश्न यह है कि क्या अुनका जीवन बुनियादी तालीमके लिअे पहलेसे ही अर्पित नहीं था? नयी तालीम सर्वोदय-व्यवस्थाका ही अेक अंग है। भूदान सर्वोदयके आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक पहलुओंसे संबंध रखता है और नयी तालीम भावी नागरिकोंके निर्माणमें सांस्कृतिक और आध्यात्मिक योगदान करती है। दोनोंमें कौनसा कार्य अधिक महत्त्वका है? बुनियादी तालीमको छोड़कर भूदानमें जाना निश्चय ही अेक कदम पीछे हटने जैसा है। बाअिबलकी भाषामें कहें तो "यह नियमके विरुद्ध है कि बच्चोंके हाथसे रोटी लेकर अुसे कुत्तोंको डाल दिया जाय।" अिसी तरह श्री शंकरराव देव और श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे, जो कि सर्व-सेवा-संघमें महत्त्वपूर्ण पदों पर काम कर रहे थे, अपनी जगह छोड़कर भूदानमें चले गये हैं। अैसा और भी कअी लोगोंने किया है,

www.vinoba.in

लेकिन अिन कुछका जिक्र यह स्पष्ट करनेके लिअे किया गया है कि हमारा साधनोंका — कार्यकर्ताओंका — संग्रह अैसा नहीं होना चाहिये जिससे सर्वोदयके दूसरे कार्योंको हानि पहुंचे।

गांधीजीने जब सत्याग्रहियोंकी आम मांग पेश की, तो अुन्होंने कचहरियां, कालेज, स्कूल आदि अुन सारी संस्थाओंको खाली कराया जो सर्वोदय व्यवस्थाके बाहर थीं। वे सर्वोदयके बाहर ही नहीं, अुसके खिलाफ भी थीं और अिसलिअे अुन्हें कमजोर बनाना प्रगतिका कदम था। मैं आपको बताअूं कि प्रत्येक आन्दोलनके समय गांधीजी मुझे स्पष्ट सूचना देते थे कि मैं अपना काम न छोड़ूं। "गिरफ्तार होनेकी कोशिश मत करो और न कोअी प्रगट विरोधका काम करो। अगर अपना मौजूदा काम ही तुम ठीक तरहसे करते रहोगे, तो वे तुम्हें गिरफ्तार करेंगे ही।" मैंने कभी कोअी प्रगट विरोध-कार्य नहीं किया और न गिरफ्तार होनेकी कोशिश की और फिर भी मैं सात बार जेल हो आया। अगर हमने सर्वोदयके अंतर्गत किसी भी कार्यक्रमको अपना जीवन समर्पण किया है, तो हम किसी भी हालतमें अुसे छोड़ नहीं सकते। लक्ष्य निर्धारित करनेसे अत्युत्साही व्यक्ति अैसा कर बैठते हैं। हम अिस लोभसे सावधान रहें।

सर्वोदयमें कुछ भी अूंचा या नीचा नहीं है। वह भंगी-काम भी क्यों न हो, अगर अुसे सच्ची सर्वोदयी भावनासे किया जाय, तो वह दूसरे कामोंके समान ही महत्त्वपूर्ण है। जिस बातका हमें सबसे ज्यादा ध्यान रखना है, वह है अहिंसा। अुससे ज्यादा जरूरी और कोअी चीज नहीं है।

(अंग्रेजीसे) जे० सी० कुमारप्पा

जगतमें शांति कैसे हो?

[ता० २४-४-'५५ को ओडगां (अुत्कल) में दिये गये प्रार्थना-प्रवचनसे।]

आज आप देखते हैं कि अुधर बांडुंगमें परिषद् चल रही है। दुनियाके आधेसे ज्यादा राष्ट्रोंके प्रतिनिधि वहां अिकट्ठे हुअे हैं, और वे चाहते हैं कि दुनियामें शांति हो और दुनियाके लोगोंको युद्धमें न ढकेला जाय, अिसलिअे अपना नैतिक बल खर्च करें। वहां पंडित नेहरूने जाहिर किया कि चाहे दुनियामें लड़ाअी चले तो भी हिन्दुस्तान अुसमें हिस्सा नहीं लेगा, अपने देशकी रक्षा अवश्य करेगा और युद्धमें भाग नहीं लेगा। और यह कहते हुअे अुन्होंने बताया कि मैं तो किसी बमके आधार पर यह नहीं बोल रहा हूं। मैं यह जो बोल रहा हूं वह हिन्दुस्तानकी जनतामें मेरा जो विश्वास है अुसके आधार पर बोल रहा हूं। दुनिया युद्धकी आगमें लिपट जाय तो भी हम अलग रहेंगे, हमारे देशकी आजादीकी रक्षा करेंगे, शांतिके लिअे सतत कोशिश करेंगे।

यह प्रतिज्ञा तभी पूरी होगी जब हम नैतिक शक्ति पर आधार रखेंगे और नैतिक शक्ति पैदा करेंगे। हमको समझना होगा कि हम अगर लश्करकी शक्ति पर भरोसा रखेंगे तो वह शक्ति हिन्दुस्तानमें नहीं है और अगर हम नैतिक शक्ति पर विश्वास रखेंगे तो हिन्दुस्तानमें नैतिक शक्ति पैदा हो सकती है। हिन्दुस्तानके पीछे दस हजार सालका अितिहास है, जिस अितिहासमें हिन्दुस्तानकी जनताने और हिन्दुस्तानके महापुरुषोंने सतत शांतिके प्रयोग किये हैं।

आज सारे अेशियामें लोग शांति चाहते हैं, सारी दुनियाके लोग शांति चाहते हैं। तो सारे अेशियामें और दुनियामें शांति फैलानेके लिअे बुद्ध भगवान्का और महात्मा गांधीका संदेश काम दे सकता है। महात्मा गांधी और बुद्ध भगवान् दोनों ही हिन्दुस्तानमें पैदा हुअे हैं। और अिन दोनोंकी वाणीमें ताकत कैसे आयी? वह ताकत अिसलिअे आयी कि हिन्दुस्तान देशकी बनावट ही अहिंसामें हुअी है। और अपने सारे अितिहासमें हिन्दुस्तानने किसी देशको तकलीफ नहीं दी है।

लेकिन हम केवल हिंसक लड़ाअीमें भाग नहीं लेंगे, अितना कहनेसे अहिंसाका बल नहीं बनता है। यह तो अभावात्मक बात हो गयी। अहिंसाके लिअे कुछ न कुछ भावात्मक काम करना होगा। तभी हमारा अहिंसाका बल बढ़ेगा। हमें यह कहना होगा कि हमारे देशमें जो विषमता है आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रमें, अुस विषमताको अहिंसाकी शक्तिसे मिटाना होगा। यह प्रत्यक्ष भावरूप काम करना होगा, तभी अहिंसाकी शक्ति बढ़ेगी और दुनिया पर अुसका असर होगा। यही सोचिये कि आपके प्राअिम मिनिस्टर दुनिया भरमें घूमते हैं और शांति और अहिंसाकी बात दुनिया भरको सुनाते हैं। अुसके साथ-साथ वे अगर यह भी कह सकें कि हमारे देशकी सामाजिक और आर्थिक समस्या शांति और अहिंसासे हमने हल की है, तो अुनकी वाणीमें कितना बल आयेगा? तो अिस भूदान-यज्ञके साथ-साथ संपत्तिदान, श्रमदान अित्यादि जो जुड़े हैं अुन सब यज्ञोंमें और सर्वोदय विचारमें अिस तरह भावरूप नैतिक और अहिंसक शक्ति निर्माण करनेका माद्दा है। अिसलिअे हिन्दुस्तानके जवानोंमें भूदानके लिअे और सर्वोदयके लिअे अत्यन्त आकर्षण पैदा हुआ है।

आज सबसे ज्यादा भयभीत अगर कोअी हैं तो भिन्न भिन्न राष्ट्रोंकी सरकारके प्रतिनिधि ज्यादासे ज्यादा भयभीत हैं। हम कहते हैं कि यह सब सरकारोंकी सरकार जो है जनता, अिसमें शक्ति है प्रेमकी, अहिंसाकी, शांतिकी, सहयोगकी। अुसको जगाअिये तो दुनिया भयसे मुक्ति पायेगी।

समझनेकी बात है कि भूमि सबके लिअे है। वह खरीदनेकी और बिक्रीकी चीज नहीं है। और अुसकी मालकियत नहीं हो सकती। अिस वास्ते भूमि पर सबका अधिकार है और सब लोगोंको भूमिकी सेवा करनेका मौका मिलना चाहिये। जैसे हवा, जैसे पानी, जैसे सूरजकी रोशनी सबके लिअे है, वैसे भूमि भी सबके लिअे है। यह बात सबको प्रेमसे समझानी है। हमारी वाणीमें कटुता नहीं होनी चाहिये, नम्रता होनी चाहिये।

हमारे कुछ भाअी डर गये हैं कि न मालूम कानून कैसा होगा, क्या होगा? अिसलिअे हिन्दुस्तानमें आजकल बेदखलियां आरंभ हुअी हैं। हम नहीं समझते कि जिन्होंने बेदखली की है वे कठोर-हृदय होंगे। हम समझते हैं कि अुनके हृदयमें डर पैदा हुआ है, निर्भयता नहीं है, अविश्वास है। अिसलिअे वे डरसे गलत काम करते हैं। हमारा अुनसे भी प्रेम है और जो बेदखल हुअे हैं अुन पर तो हमारा प्रेम है ही। तो हम अुन लोगोंको समझाते हैं कि जिनको बेदखल किया है वे अगर भूमिहीन होते हैं, तो बेदखली की हुअी जमीन आप दान कर दें तो वह जमीन बेदखल हुओंको वापिस दी जायेगी। अुन किसानोंका नाम दानपत्र पर लिख दें। तो जो भयसे गलत काम हुआ है, वह दुरुस्त हो जायेगा और दान भी होगा और अुसके कारण समाजमें प्रेम-शक्ति बढ़ेगी। ये सारे हमारे भाअी हैं। जिनके पास कम जमीन है ज्यादा नहीं है, वे भी अगर कोअी गलत काम करें, तो अुन्हें हम दोष नहीं दे सकते, अुनका द्वेष नहीं कर सकते। हम प्रेमसे समझायेंगे तो वे समझ जायेंगे। भूदानके काममें बेदखलीको रोकनेका और अुन दोनों पक्षोंमें पड़नेका काम शामिल है।

विनोबा

www.vinoba.in

२५०० वीं बुद्ध-जयंती

अगले साल बोधगयामें भगवान् बुद्धकी २५०० वीं (वैशाखी पूर्णिमा) जयन्ती ८ करोड़ रुपये खर्च करके मनाअी जायगी। यह दिन बुद्ध भगवान्का जन्मदिन, बोधि-दिन तथा निर्वाण-दिन भी माना जाता है। यह अेक सुन्दर चीज है।

अगले साल अिस दिन बड़ा आन्तरराष्ट्रीय समारोह होगा, जिसमें मुख्यतः बौद्ध राष्ट्र शामिल होंगे।

अिस निमित्तसे मुख्य चार बौद्ध धामोंका जीर्णोद्धार होगा — लुंबिनी (जन्मस्थान), बुद्धगया (बोधिस्थान), सारनाथ (प्रथम अुपदेश स्थान) तथा कुशिनारा (निर्वाण स्थान)। महाजयन्ती गयामें मनाअी जायगी। अुसका स्थान वही रखनेका निश्चय किया गया है, जहां पिछले साल सर्वोदय सम्मेलन हुआ था। अुसीके पास विनोबाजीके द्वारा स्थापित समन्वयाश्रम भी है।

समन्वयाश्रम शांकर और बौद्ध तत्त्वोंकी समन्वित या परिपूर्ण फिलसूफी विचारनेके लिअे स्थापित किया गया है। बौद्ध परिषदके कारण अिस विचारकी अधिक छानबीन होगी अैसा हम मानें। दूसरी तरह भी आज यह वस्तु चर्चाका विषय बनी हुअी है।

बौद्धधर्मका जन्म भारतमें हुआ, लेकिन अुसका विकास भारतसे बाहर हुआ और वहीं वह टिका। शंकराचार्यके युगसे अुसका अन्त हो गया। लेकिन अिससे भारतने बौद्ध सन्देशको छोड़ नहीं दिया। अनेक दृष्टियों और साधनाओंके सम्मेलन-रूप हिन्दू धर्मने अुसे अपनेमें समा लिया था। अब जगत फिरसे अनुभवके परिणाम-स्वरूप अहिंसाको याद करता है, तब भारत अुसके स्थूल केन्द्रोंके समान चार धामोंका जीर्णोद्धार करता है, यह खुशीकी बात है।

चीन, जापान, कंबोडिया, ब्रह्मदेश, लंका वगैरा देश राजनीतिके क्षेत्रमें भी भारतके साथी मित्र हैं, अिससे अिस महोत्सवकी सफलता और ज्यादा बढ़ जायगी। हम आशा रखें कि बुद्ध भगवान्के नाम पर मिलनेवाले ये सब राष्ट्र वैयक्तिक मारके निर्वाणके विषयमें ही नहीं, बल्कि युद्धरूपी महामारीके निर्वाणके विषयमें भी सोचेंगे और अुसके भी आर्य सत्य और अष्टांग मार्ग संसारको देंगे। अिसमें भारतकी जिम्मेदारी बहुत बड़ी है, क्योंकि अुसके राष्ट्रपिता महात्मा गांधी हैं।

* * *

श्री आम्बेडकर फिरसे बौद्ध बननेका मनोरथ पूरा करनेकी धमकी देते हैं। अैसा लगता है कि वे अगले साल अिसके समारंभका आयोजन करना चाहते हैं। आजके अिस युगमें जगत्का धर्म-विचार अितना विशाल और व्यापक बनता जा रहा है कि धर्म-परिवर्तन विचित्र वस्तु मालूम होती है। क्योंकि जिसे वास्तवमें धार्मिक बनना है, अुसे अपना जन्मधर्म पूरा पूरा मार्गदर्शन प्रदान करता ही है। और अुसमें सुधारकी हमेशा गुंजाअिश रहती है। अिसलिअे श्री आम्बेडकरका यह कदम धर्मदृष्टिकी अपेक्षा दूसरी कोअी दृष्टि रखनेवाला मालूम होता है। यदि अिसके पीछे हिन्दू समाजके प्रति वैरभाव काम कर रहा हो, तो यह धर्मान्तर धर्म्य नहीं माना जायगा। न अुससे स्वयं आम्बेडकरको या दूसरे किसीको लाभ होगा।

यहां मुझे पूज्य कस्तूरबा और बापूजी याद आते हैं। अुनके ज्येष्ठ पुत्र स्व० हरिलाल गांधी मुसलमान हुअे, तब अिन वृद्ध माता-पिताने अेक ही बात कही: अैसा करके भी हमारा यह पुत्र सचमुच 'हरिका लाल' बने तो वह भले अपनेको अब्दुल्ला कहे; अिस शब्दका भी यही अर्थ होता है।

अिसी तरह आज भारतका समाज श्री आम्बेडकरसे कह सकता है कि आप यदि अैसा करके भारतके बड़े और सच्चे सेवक हो सकते हों तो भले बौद्ध बन जाअिये। परंतु यदि आपके मनमें और कोअी भावना हो, तो अिससे बौद्धधर्मका या अन्य किसीका कल्याण नहीं होगा।

१८-५-'५५ मगनभाई देसाई
(गुजरातीसे)

विश्वशांतिकी राजनीति

१९३८ में हिटलरने आस्ट्रिया हजम कर लिया। सामनेसे अिंग्लैण्ड, अमेरिका, रूस, फ्रान्स वगैरा देशोंने अुसे जकड़ लिया। अिस तरह युद्ध तो रुका, परन्तु बादमें अुसके विजेता आपसमें लड़ पड़े और अुनका झगड़ा आज भी चल रहा है, जिसे अंग्रेजीवाले 'कोल्ड वार' या 'ठंडी लड़ाअी' कहते हैं।

फिर भी अीश्वरकी कृपा है कि मंद गतिसे ही सही अुनके सवाल अेक अेक करके हल होते जा रहे हैं। आस्ट्रिया हिटलरके पंजेसे छूटनेके बाद अपने छुड़ानेवाले राष्ट्रोंके हाथमें पड़ा। और अब वह अुनके पंजेसे छूटकर स्वतंत्र हुआ है।

जर्मनी भी विजेता राष्ट्रोंके अैसे ही अधिकारका शिकार हुआ था। परन्तु अुसके दो टुकड़े हुअे। अेक पर रूसने अधिकार जमा लिया, दूसरे पर अिंग्लैण्ड-अमेरिका-फ्रान्सने। अिन तीनों देशोंने पश्चिम युरोपके कुछ राज्योंको मिलाकर 'नाटो' के नामसे पुकारा जानेवाला करार किया, जिससे अेक-दूसरेकी सहायता और रक्षा अच्छी तरह हो सके। अुन्होंने अपने हिस्सेके जर्मनीको स्वतंत्र बनाकर अुसे शस्त्रसज्ज करके अुक्त 'नाटो' करारमें शामिल कर लिया है।

आस्ट्रियामें चारों पुराने मित्रराष्ट्र अेक होकर काम कर सके, लेकिन जर्मनीमें अैसा संभव नहीं हुआ। अिसलिअे रशियन या पूर्व जर्मनी अलग राष्ट्र है और वह सोवियट महामण्डलका अेक मनका बन रहा है।

दूसरे, पश्चिम जर्मनी सशस्त्र बनकर 'नाटो' करारमें शरीक हुआ, अिसे रूस बहुत खतरनाक और अपने खिलाफ अुठाया गया कदम मानता है। अुसके जवाबमें अपने पक्षके युरोपके सात-आठ राष्ट्रोंको मिलाकर रूसने अभी वार्सामें पूर्वोक्त 'नाटो' करारके खिलाफ दूसरा पूर्वीय 'नाटो' करार किया है! चर्चिलके कथनानुसार 'बल द्वारा शान्ति' बनाये रखनेकी युक्तिके व्यूहकी रचना अिस तरह पूरी हो गअी है!

आस्ट्रिया स्वतंत्र हुआ अुसमें अेक महत्त्वकी शर्त यह है कि स्विट्जरलैण्डकी तरह वह देश तटस्थ रहेगा। यह शर्त अुस देशने भी स्वीकार की है।

रूस अब कहता है कि आस्ट्रियाकी तरह जर्मनीको भी तटस्थ राष्ट्र रखा जाय, तो मैं दोनों जर्मनीको अिकट्ठा करके अेक स्वतंत्र तटस्थ राष्ट्र रचनेके लिअे तैयार हूं। अैसा हो तो युरोपके पूर्वी और पश्चिमी प्रदेशोंके बीच तटस्थताकी दीवार खड़ी हो जायगी।

रूसको अिस बातका बड़ा डर है कि जर्मनी सशस्त्र बनेगा तो वह फिर लड़ाअीको जगायेगा। अमेरिका, अिंग्लैण्ड वगैरा मित्र राष्ट्रोंको अैसा लगता है कि जर्मनी हमारे गुटमें सशस्त्र बनकर शामिल होता है तो हमें रूस विरोधी मोर्चा खड़ा करनेमें बहुत बड़ी मदद मिलेगी। आस्ट्रियाका प्रश्न हल हो जानेके बाद अब जर्मनीकी अुलझी हुअी समस्या हल करनेका प्रश्न खड़ा होता है।

और रूसने अब 'युनो' के सामने यह प्रस्ताव रखा है कि अणुशस्त्रों तथा अन्य सामान्य शस्त्रों पर नियंत्रण लगाया जाय और धीरे-धीरे अुनका अन्त करनेकी बात सोची जाय। अिसका क्रम भी अुसने बताया है। लेकिन अिसमें बड़ी कठिनाअी है परस्पर शंका और अविश्वाससे अुत्पन्न होनेवाले भयकी।

और ये दो पक्ष भारत जैसे तटस्थ तीसरे पक्षके बारेमें भी शंका करने लगते हैं कि हमारे बीच बेबनाव पैदा होने पर अिस तीसरे पक्षकी तटस्थता कहीं टूट गअी तो क्या होगा?

www.vinoba.in

जवाहरलालजीने बांडुंग सम्मेलनमें भारतकी भावी युद्धनीतिको स्पष्ट करते हुअे जोरदार शब्दोंमें कहा है कि भगवान् न करे कभी फिरसे विश्वयुद्ध हुआ तो भारत किसी भी हालतमें किसी पक्षके साथ शरीक नहीं होगा। तब खुद होकर किसी राष्ट्र पर अुसके आक्रमण करनेकी तो बात ही कहां रही? भारत विश्वकी शान्तिमें अिस तरह अपना योग देगा। गोआका हल हमारी अिस नीतिकी कसौटी करनेवाला होगा।

१९-५-'५५ मगनभाई देसाई
(गुजरातीसे)

हरिजनसेवक

१८ जून १९५५

हमारा सबसे बड़ा आधारभूत अुद्योग

पिछले माह पुरीमें हुअी अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक कान्फरेन्समें बोलते हुअे श्री खेरने हमारे देशमें होनेवाले शैक्षणिक सुधारकी स्थितिके बारेमें अेक मार्मिक विधान किया, जो भारतीय शिक्षा-पद्धतिके अेक भारी दोष पर हमारा ध्यान केन्द्रित करता है। श्री खेरने कहा:

> "हमें अिस सत्यसे अिन्कार नहीं करना चाहिये कि ग्रामीण क्षेत्रोंकी प्राथमिक शालायें शहरोंकी प्राथमिक शालाओंसे भिन्न होंगी ही। आज तक हम अिस सत्यकी अुपेक्षा करते रहे हैं, और शिक्षा-संबंधी हमारे सुधारोंकी कल्पना और रचना न केवल शहरी लोगों द्वारा की जाती है, बल्कि वह शहरी लोगोंके लिअे ही होती है।" (मोटे टाअिप मैंने किये हैं।)

शिक्षा-संबंधी सुधार करनेके हमारे तरीकोंमें शहरोंके पक्षपातका अूपर जो आरोप लगाया गया है, अुसका अुदाहरण हमें ताजीसे ताजी माध्यमिक शिक्षण कमीशन रिपोर्टमें भी देखनेको मिल सकता है। सीनियर प्राथमिक शालाओंमें अंग्रेजी भाषा सिखानेके प्रश्न पर अुसमें जो अनुदार या लगभग प्रतिगामी रुख प्रकट किया गया है, अुसकी चर्चा अिन कालमोंमें पहले हो चुकी है। हमारे तथाकथित सुधारकोंका शहरों और शहरवासियोंके प्रति पक्षपात ही केवल अिस रुखका कारण था। दूसरा अुदाहरण बहुविध हेतुओंवाले (मल्टी-परपज) हाअीस्कूलोंके संबंधमें की गअी कमीशनकी मुख्य सिफारिशसे दिया जा सकता है।

अिस सिफारिशमें विभिन्न प्रकारके विद्यार्थियोंके अनुकूल हो सकनेवाले वैकल्पिक पाठ्यक्रमोंकी कल्पना की गअी है। बड़े आश्चर्यकी बात है कि ये सारे पाठ्यक्रम मुख्यतः शहरी विद्यार्थियोंको काम देनेकी दृष्टिसे सोचे गये हैं। अुनमें वैकल्पिक अुद्योगोंके रूपमें ग्रामीण दस्तकारियां शामिल नहीं की गअी हैं, जो ग्रामीण हाअीस्कूलोंके लिअे खास तौर पर बहुत ज्यादा अनुकूल हैं। हम जानते हैं कि हमारे देशकी योजनाबद्ध अर्थ-रचनामें ये ग्रामोद्योग कैसा महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण करते जा रहे हैं। अुनका स्वाभाविक गुण ही अितना मजबूर करनेवाला है कि देशके विद्वानोंका अुनके प्रति विवेकशून्य पूर्वग्रह होनेके बावजूद वे भारतके आर्थिक विचारमें अपना स्थान ले रहे हैं। अिसलिअे निकट भविष्यमें ही देशको वैसे हजारों तालीम प्राप्त नौजवान स्त्री-पुरुषोंकी जरूरत होगी, जो गांवों और कस्बों वगैरामें खोली जानेवाली सेवाओंमें काम कर सकें।

कम्युनिटी प्रोजेक्ट और नेशनल अेक्स्टेन्शन सर्विस योजनाओंमें अभी तक ग्रामोद्योगोंको स्थान नहीं दिया गया था — यह अुन थोड़ेसे शिक्षित लोगोंके शहरी पक्षपातका अेक दूसरा अुदाहरण है, जो आज योजना बनाते हैं, अुसका मार्गदर्शन करते हैं और अुसका संचालन करते हैं। खुशकिस्मतीसे अुन्होंने अब ग्रामोद्योगोंकी ओर ध्यान देना शुरू किया है और द्वितीय पंचवर्षीय योजना खादी-ग्रामोद्योग बोर्डके मातहत अिन अुद्योगोंको थोड़ा स्थान देना चाहती है। दुर्भाग्यसे आज हमारी यह स्थिति है कि हमारी शिक्षा-पद्धति अैसे काफी तालीम प्राप्त लोग नहीं निकालती, जो अिन नये परंतु सादे कामोंको भी हाथमें ले सकें। अगर हमने थोड़ी श्रद्धा और आवश्यक साहससे बुनियादी और अुत्तर-बुनियादी शिक्षाको कार्य-रूपमें परिणत किया होता तो आज परिस्थितियां बिलकुल दूसरी होतीं। लेकिन जब जागे तभी सबेराके न्यायसे आज भी अिस दिशामें बहुत कुछ किया जा सकता है।

अगर हम शिक्षा-सुधारके शहरी पक्षपातके प्रश्न पर गहरा विचार करें, तो हमें पता चलेगा कि यह सचमुच केवल भौगोलिक वस्तु नहीं है; सच पूछा जाय तो यह अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति द्वारा पैदा किया हुआ हमारे समाजकी वर्ग-रचनाका भेद है। यह 'वर्ग बनाम आम लोग' का प्रश्न है।

भारतमें अंग्रेजी शिक्षाने अंग्रेजी जाननेवाले लोगोंका अैसा वर्ग खड़ा किया, जिन्होंने मुख्यतः देशके शासनकार्यमें ही अपनेको लगाया। विदेशी राज्यमें यहां जिस शिक्षा-पद्धतिका विकास हुआ, अुसने अंग्रेजी शासनकी यही जरूरत खास तौर पर पूरी की। अिसने कुछ दशकोंमें हमारी देशी शिक्षा-पद्धतिकी पूरी शकल ही बदल डाली। शैक्षणिक और सांस्कृतिक मूल्य बदलने लगे, जिन्होंने देशमें अेक अैसे मध्यम वर्गको जन्म दिया, जो नअी पद्धतिके मातहत काफी शिक्षा और तालीम प्राप्त होनेके कारण सरकारी नौकरियोंमें लगाया जा सके। जो शिक्षा देशकी संपूर्ण प्रजाके लिअे होनी चाहिये थी, अुसने कुछ लोगोंको धंधोंके लिअे तैयार करनेकी निरी तालीमका रूप ले लिया।

स्वभावतः अिस स्थितिसे हमारे शैक्षणिक और सांस्कृतिक मूल्य भी पूरी तरह बदल गये, जिसने शिक्षा-पद्धतिको वर्ग-शिक्षणका रूप दे दिया। अिस नअी व्यवस्था या परिवर्तित मूल्योंके दबावसे हमारी प्रजाकी मूलभूत शिक्षामें भी, जो युगोंसे लोगोंकी अपनी स्वशासित प्रवृत्तिके नाते काम कर रही थी, गड़बड़ी पैदा हो गअी। यह पद्धति जो ८० प्रतिशतसे ज्यादा लोगोंको साक्षर बनाती थी, अुलट गअी और हम अैसी दयनीय स्थितिमें आ पड़े, जिसमें ८० प्रतिशतसे अधिक लोग निरक्षर हैं और बाकीके लोगोंको अैसी तालीम मिलती है कि वे हमारे देशके नवनिर्माणमें सहायक होनेमें लगभग असमर्थ हैं। ये ८० प्रतिशत निरक्षर न केवल विदेशी शासकोंके लिअे, बल्कि अुन्हें मदद करनेवाले देशके १० प्रतिशत अंग्रेजी शिक्षण प्राप्त किये हुअे लोगोंके लिअे भी सख्त मेहनत-मशक्कत करनेवाले बन गये। बल्कि, जैसा कि राष्ट्रपतिजीने कुछ हफ्ते पहले कहा था, ये १० प्रतिशत शिक्षित लोग अब 'शिक्षित बेकारों' की संख्या बढ़ा रहे हैं।

ये पुरानी पड़ चुकी शिक्षा-पद्धतिकी अुपज हैं, जो आज भी हमारे शैक्षणिक सुधार, शासन और तंत्र पर नियंत्रण रखते हैं। अिसका नतीजा जो होना चाहिये वही होता है, अर्थात् "हमारे शिक्षा-संबंधी सुधारोंकी कल्पना और रचना न केवल शहरी लोगों द्वारा (यानी अुन वर्गों द्वारा जो अब पुरानी पड़ रही और राष्ट्रविरोधी सिद्ध हो रही अंग्रेजी शिक्षण-पद्धतिकी अुपज हैं) की जाती है, बल्कि वह शहरी लोगोंके लिअे ही होती है।" जब तक हमारे लोग हिम्मतके साथ अिस स्थितिको सुधारनेकी चुनौती नहीं देते, तब तक किसी भी सच्ची लोकतांत्रिक योजनामें

www.vinoba.in

ठोस या स्थायी प्रगति करना संभव नहीं होगा। अिस बातको याद रखना चाहिये कि शिक्षा किसी भी राष्ट्रका सबसे बड़ा जीवित अुद्योग है। अुसका स्वरूप ही अैसा है कि वह भौतिक बड़े अुद्योगोंकी तरह मनुष्योंका अुपयोग कम करके मुख्यतः पैसे और यंत्रकी सहायतासे नहीं चलाया जा सकता। अिसमें मनुष्य प्रधान है, जो जीती-जागती जरूरतोंके अनुसार पैसेका अुपयोग करता है। दूसरी पंचवर्षीय योजनाको अिस पर ज्यादा ध्यान देना चाहिये — कमसे कम अुतना तो देना ही चाहिये जितना कि तथाकथित बड़े या आधारभूत अुद्योगों पर दिया जाता है, क्योंकि शिक्षा हमेशा किसी राष्ट्रका सबसे महत्त्वपूर्ण और सबसे आधारभूत अुद्योग होता है।

१२-६-'५५ मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

विविध विचार

अिस वर्ष सर्वत्र असंख्य शादियां हुअीं। खूब खाना-पीना हुआ, बाजे बजे और धूमधाम हुअी। पढ़नेवाले लड़कोंको अिसमें से अच्छी तरह अुनका समाज-शिक्षण मिला। अुनके पीछे लोगोंने करोड़ों रुपये खर्च किये। समाचारपत्रवालोंने पूनामें अेक-दो दिनमें जो हजारों विवाह हुअे और यज्ञोपवीत समारंभ हुअे, अुन्हें 'लग्न-ज्वर' कहकर वर्णित किया। कहा जाता है कि शादियोंकी अिस बाढ़का कारण यह है कि आगामी वर्ष सिंहस्थ है।

हमारी संसदने भी अपने अनेक कामोंमें हिन्दू-विवाह, विवाह-विच्छेद, और अुत्तराधिकारसे सम्बन्धित कानूनों पर विचार किया। अिन्हें पास करनेमें अुसने भी अुतावली दिखायी।

अिन सुधारों पर विचार करते समय, चूंकि संसदके सभ्य अूपरी या मध्यमवर्गके हैं अिसलिअे अुन्हें यह याद दिलाना पड़ा कि हिन्दुओंमें ८० प्रतिशतसे ज्यादा लोगोंमें — कानूनसे नहीं — जनशक्तिके आधार पर विवाह-विच्छेद आदि बातें जमानेसे चली आ रही हैं। अब अिन चीजोंकी अभी तक अपनेको अुच्चवर्णी मानते आनेवाले लोग भी अपने लिअे मांग करने लगे हैं। वे अितने 'सुधरे हुअे' — या प्रगतिशील हैं कि अिसके लिअे अुन्हें कानून चाहिये! लेकिन अिस तरह वे ८० प्रतिशत लोगोंके साथ समानताकी दिशामें बढ़ रहे हैं, यह तो ठीक है न? और अुस हद तक जात-पांतकी प्रथामें सुधार हो रहा है, यह तो कहा जायगा कि नहीं? अूंची और नीची जातियोंके बीचमें यह अेक बड़ा भेद तो अब नहीं रहा, अैसा कहा जा सकता है।

कानूनने अेक विवाह-पद्धतिका आदेश किया है। लेकिन अिसका यह मतलब नहीं कि राम-सीताकी तरह जीवनमें केवल अेक ही बार विवाह करना। कोअी जितनी बार चाहे विवाह कर सकता है, शर्त अितनी ही है कि अेकसाथ नहीं। पहले हिन्दू अेकसाथ अनेक विवाह कर सकते थे — (मुसलमान तो वैसा धर्मबुद्धिसे कर सकते हैं, अुन्हें यह कानून लागू नहीं होता) अब अेक साथ नहीं कर सकते, अेकके बाद दूसरा, अिस तरह कर सकेंगे। बस अितना ही फर्क हुआ है। लेकिन यह ध्यान रखना होगा कि अिन्हें 'अनेक विवाह' नहीं कहा जायगा। स्त्रियोंको भी यह अधिकार रहेगा।

और अेकके बाद दूसरा लग्न करनेके लिअे अेकके मरणसे घर-भंग होनेकी राह देखते बैठनेकी जरूरत नहीं है, अब तो आप कानूनकी मददसे अिच्छा होने पर घर-भंग कर सकते हैं। और यह नहीं भूलना है कि अिसमें 'सुधार' या प्रगति है। अरे, कितने युवक तो अैसे कानूनी घर-भंगका हक देनेवाली विवाह-पद्धति ही पसंद करते हैं। विवाहमें बंधनेके समय ही अुसे तोड़नेकी युक्ति सोच रखते हैं। घरमें घुसनेके पहले बाहर कूद भागनेकी खिड़की देख रखना यंत्रशास्त्रकी दृष्टिसे भी सेफ्टी-वाल्वका सच्चा सिद्धान्त है। जन्म और मरणके प्रति समान दृष्टि रखनेका वेदांत आज विवाहके मारफत भी बढ़ रहा है!

और विवाहकी पद्धतियोंमें भी नयी-नयी रीतियां चल निकली हैं। प्राचीन कालकी गांधर्व, राक्षस या पिशाच आदि नामोंसे प्रसिद्ध पद्धतियोंके नमूने फिर देखनेमें आने लगे हैं। लेकिन वह तो अेक बड़ी रामायण है। अुसकी फिर कभी चर्चा करूंगा।

संक्षेपमें कहें तो आज अेक नयी स्मृति बन रही है; लेकिन किसी समर्थ स्मृतिकारके बिना ही। 'सत्यके प्रयोगों' की तरह 'नव-संसार' की रचनाके प्रयोग आज चल रहे हैं। लेकिन वे १०-१५ प्रतिशत पहले और अूंचे माने जानेवाले लोगोंमें ही। और अिस वर्गके लोगोंकी मनोदशा और विचारसृष्टि कितनी बेहाल है, यह तो भगवान् ही जानते हैं।

दाम्पत्यका आदर्श

पार्लियामेन्टमें विवाहके कानूनकी चर्चामें हिन्दू दाम्पत्य जीवनके आदर्शकी चर्चा भी हुअी। अुसमें कहा गया कि विवाह अेक संस्कार है, करार नहीं। संस्कारमें शिक्षाकी, जीवन-विकासकी दृष्टि होती है; करारमें व्यापार है — सौदा है। अिसलिअे अेकमें धर्मदृष्टि होनी चाहिये और दूसरेमें व्यवहार-दक्षता होनी चाहिये। सीताराम हिन्दुओंका दाम्पत्य-आदर्श है, और वह आदर्श आज भी बना हुआ है। तलाक द्वारा अैच्छिक गृहभंगकी हवा चल रही है, तब यह चीज याद रखनी चाहिये। अुसमें अेक विवाह आजीवन व्रत बनता है। हिन्दुओंकी विवाह-पद्धतिमें यह सर्वोच्च शिखर जैसा है। वह दृष्टिसे बाहर जायगा, तो हिन्दू समाजकी अूंची दृष्टि नहीं रहेगी। हिन्दू समाज अेक प्राचीन वयोवृद्ध समाज है। परन्तु वह जीर्णशीर्ण समाज नहीं — सनातन समाज है। क्योंकि देशकालके अनुसार होनेवाली बदला-बदलीमें भी वह अपने रामको भूलता नहीं है। विवाह कानून जैसा भी चाहें हम बनायें, परन्तु अुसका केन्द्रबिन्दु अैसी भक्तिमें निहित है। यह चीज कानूनसे नहीं, परन्तु समाजके सच्चे धर्मपरायण जीवनसे ही सिद्ध हो सकती है।

नये जमानेका अर्थशास्त्र

हमारे अर्थमंत्री आज पूंजीके बहुत भूखे मालूम होते हैं। वैसे तो सारी ही सभ्य दुनिया 'पूंजी पूंजी' पुकारती रहती है। सब कुछ बिलकुल पूंजीवादी बन गया है। किसान धान्य पाकर भी 'धन धन' करता रहता है और 'धान्य' से कभी तृप्त नहीं होता। मानो पूंजी अर्वाचीन मानवकी खुराक हो! कुछ लोग अिसे 'विटामिन अेम' (मनी) भी कहते हैं।

अर्थमंत्रीको सारे देशकी तरफसे भूख लगती है। विवाहोंके अिस भारी खर्चमें से वे कुछ नहीं छीन सकते? कानूनके मुताबिक विवाहोंकी नोंध करना शुरू हुआ है, अिसलिअे अमुक फीस तो सरकारको मिलने लगी ही होगी। परन्तु क्या ज्यादा आमदनी नहीं की जा सकती? क्योंकि खर्चीली विकास-योजनाका लग्न-मौसम सरकारने भी कोअी छोटा-मोटा शुरू नहीं किया है। और अुसमें भी क्या लोगोंके विवाहोंके खर्च जैसी धांधली नहीं मालूम होती?

विवाहमें जिमानेकी छूट मिल जानेसे जीमनेवालोंको तो आनन्द आ गया है। जीमनेका खर्च तो ठीक, लेकिन रोशनीका और ठाटबाटके दूसरे खर्च कितने बढ़ गये हैं! विवाहके मंडप मानो सिनेमामें देखे जानेवाले राजा-महाराजाओंके दरबार हों और बनाव-शृंगार करके आनेवाले स्त्री-पुरुष मानो सिनेमाके नट-नटी हों। क्योंकि आज तो हमारा शृंगार अुन नट-नटियोंको आदर्श मानकर चलता है न!

परन्तु अिससे क्या नये नये और सभ्य धन्धोंको प्रोत्साहन नहीं मिलता? बेकार मध्यमवर्ग आसानीसे कमा सके, अैसे धन्धे नहीं बढ़ते?

www.vinoba.in

कोओी कहेंगे कि आखिर अिससे कितने धन्धे बढ़ेंगे? बात सच है, परन्तु अिसी तरह यदि बिना धन्धेके धन्धे बढ़ाने लगें तो मायाके खेलकी तरह बिना धन्धेके धन्धोंकी बेकार सृष्टि काम नहीं देगी? यह नओी सभ्यता अिसके सिवा और भला क्या है?

परन्तु अैसे धन्धोंका खर्च कैसे निकले? यह सवाल भी अर्वाचीन अर्थशास्त्रका अज्ञान बताता है। सरकार नोट छाप कर समृद्धि बताती है; लोग मिलावट और चालाकी करके धन पैदा करते हैं तथा वकीलों द्वारा बुद्धिदान पाकर कर-चोरी करते हैं। (बिक्री-कर और आय-कर कानूनके अनुसार देना है, अुसमें दान देने या किसी पर अुपकार करनेकी बात नहीं है!) काला-बाजारका दाव भी चला नहीं गया है। 'परस्परं चोरयन्तः भूरि धनमवाप्स्यथ।'

परन्तु अन्तमें व्यंगको छोड़कर बात करूं तो सनातन अर्थशास्त्र यह है कि देशका अंतिम भार तो प्रामाणिक श्रम और मानव-सदाचार पर ही रहता है। अिस धरती पर ही अुस बिना धन्धेके धन्धोंकी भद्र सृष्टिकी माया खेल सकती है। यह भार अत्यधिक न बढ़ जाय, अिसका यदि देश ध्यान न रखे तो धरती डोलेगी — आजकी भाषामें क्रान्ति होगी। यह भी मानव-समाजका सनातन नियम है। क्योंकि 'धर्मो रक्षति रक्षितः' — मानव-रक्षाका यही मूल सिद्धान्त है।

१७–५–'५५ मगनभाई देसाई
(गुजरातीसे)

शिक्षणकी जगह फौजी तालीम

भारत सरकारने राष्ट्रीय स्वयंसेवक दल नामक अेक नयी संस्था खड़ी की है। ३० दिनके अेक केम्पका आयोजन किया जायगा और अुसमें १८ से ४० वर्षकी अुम्र तकके पुरुषोंको प्राथमिक फौजी तालीम दी जायगी। अुसका हेतु यह बताया गया है कि यह प्रयोग देशकी आर्थिक और सामाजिक क्रान्तिका अेक भाग है। अुसके द्वारा लोगोंमें राष्ट्रीय सेवा, अनुशासन और स्वावलंबनकी भावना बढ़ानेका सोचा गया है। अुसके पीछे कोओी फौजी हेतु या वैसी ही किसी अनिवार्य सेवाका खयाल नहीं है।

यह काम सेनाके लोग संभालेंगे। वस्तुतः यह चीज फौजी तालीमकी नहीं, समाज-शिक्षणकी है। अिसके सिवा, अगर यह प्रयोग १८ से ४० वर्षकी अुम्रवाले लोगों पर ही किया जायगा तो क्या वह पक्के घड़े पर किनारे चढ़ाने-जैसा ही व्यर्थ श्रम नहीं होगा? मौजूदा शिक्षण-पद्धति अनुशासन और सेवाका भाव प्रेरित नहीं करती, अिसलिअे यदि अुसकी जगह अिससे काम लेनेकी बात सोची गओी हो तो भी अिसे व्यर्थ मानना होगा। कारण, धर्मकी तरह शिक्षणका स्थान भी कोओी दूसरी वस्तु नहीं ले सकती। शिक्षणको ही सुधारना चाहिये।

यहां सोचने जैसी बात यह है कि क्या अनुशासन और संयमके गुण फौजी तालीमसे ही आते हैं? यह तालीम अिन गुणोंकी शिक्षाके लिअे है या युद्धके लिअे? समाजमें अनुशासन और संयमके गुणोंका विकास करनेके लिअे हरअेक प्रजामें धर्म-संस्था और शिक्षण-संस्थाकी रचना होती है। अिनके लिअे युद्ध-संस्था होती है, अैसा तो सुननेमें कभी आया नहीं। और युद्धनिषेध तथा शान्तिके विचारोंके आजके युगमें युद्ध-संस्थाको अैसी प्रतिष्ठा देना भी दक्षताकी कमी सूचित करता है। बात यह है कि युद्धमें सफल होनेके लिअे भी ये गुण जरूरी हैं। दूसरे नागरिक या मुल्की कामोंकी तरह अगर वहां ये गुण न हों तो काम नहीं चलता। सच पूछा जाय तो मुल्की काम भी अिन गुणोंके बिना नहीं चलते, अिसीलिअे तो आज लोगोंमें अनुशासन और संयमका भाव प्रेरित करनेके लिअे अितनी मेहनत की जा रही है। सेनाका तो वे आधार हैं; लेकिन वहां अुनके मूलमें स्वेच्छा नहीं रहती, अिसलिअे वह धंधेकी तालीम बन गओी है; अुसमें शिक्षणका गुण और नागरिकताकी तालीमकी स्वेच्छा नहीं रहती। और सारे देशको सेना मानकर तो नहीं चला जा सकता; यद्यपि अैसा करना कुछ लोगोंको पसंद आता है, अैसा अहमदाबादमें अिस दलके वर्गका अुद्घाटन करते हुअे कहा गया! यह जानकर खुशी होती है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक दलका अिरादा अैसा कुछ करनेका नहीं है।

तो नागरिकोंमें अिस गुणको प्रेरित करनेके लिअे क्या करना अुचित होगा? पहली बात तो यह है कि शिक्षण-पद्धतिको ही विद्यार्थियोंमें अिन गुणोंका विकास करना चाहिये, जो कि बुनियादी तालीमका अेक प्रधान ध्येय है। दूसरे, अिन गुणोंकी सक्रिय तालीम समाजके चालू कामोंके मारफत दी जानी चाहिये। सारांश यह कि यदि समाजके सारे कामोंमें अनुशासन और संयमका पालन हो तो यह अुद्देश्य सिद्ध हो सकता है। अिसलिअे प्रजामें अिन गुणोंका विकास करनेका कारगर मार्ग यह होगा कि सरकारी तथा सार्वजनिक संस्थाओंके कामोंमें ही ये गुण प्रकट हों। आज तो अिस बातमें भारी कमी दिखाओी देती है, जिसे दूर करनेकी जरूरत है।

अिस राष्ट्रीय स्वयंसेवक दलमें आनेवालोंको जो प्रमाणपत्र मिलेंगे, वे हमारे देशके प्रचलित वातावरणमें यदि बिल्लोंका काम देनेवाले कागजके टुकड़े बनकर रह जायं तो आश्चर्य नहीं, क्योंकि हमारे यहां अैसा ही होता आया है।

१७–५–'५५ मगनभाई देसाई
(गुजरातीसे)

हमारी सबसे बड़ी प्राकृतिक संपत्ति

अमेरिकाके भूतपूर्व राजदूत श्री चार्ल्स बाओुल्सने भारतके योजनाकारोंके सामने अेक बड़ा गंभीर प्रश्न रखा है। वह प्रश्न है: 'भारतकी सबसे बड़ी प्राकृतिक संपत्ति — अुसके नौजवान लोगोंका क्या किया जाय?'

हमारे योजनाकार आज केवल आर्थिक और पैसेसे संबंध रखनेवाली बातोंमें ही बहुत मशगूल हैं। यह स्वयंसिद्ध सत्य है कि किसी भी राष्ट्रके लिअे भौतिक साधन-संपत्तिकी अपेक्षा नैतिक और मानसिक साधन-संपत्तिका हमेशा कहीं ज्यादा महत्त्व है। क्या हमारे योजनाकार अिसे भुला सकते हैं? वर्ना वे श्री बी० जी० खेर जैसे प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित व्यक्तिको पुरीमें हुओी अ० भा० प्राथमिक शिक्षक परिषद्के द्वितीय अधिवेशनका अुद्घाटन करते हुअे वह प्रश्न पूछनेके लिअे कैसे अुत्तेजित करते, जो अुन्होंने अिन शब्दोंमें पूछा है: "क्या ज्यादा साफ-सुथरे मकानों, ज्यादा चौड़ी सड़कों, पुलों और सिंचाओीके बांधोंसे अधिक बलवान, अधिक अच्छे और अधिक पवित्र मनुष्योंका कम मूल्य और कम महत्त्व है?" अुनका कहना था कि "हमारे धनका बहुत बड़ा भाग हमारे बालकोंको पाल-पोसकर और शिक्षा देकर आत्म-निर्भर, स्वाश्रयी और प्रामाणिक स्त्री-पुरुष बनानेमें खर्च किया जाना चाहिये।"

प्रश्न यह है कि अगर भारतके तरुण लोग बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षाके बिना बढ़ते हैं और अिसलिअे नीचे गिरते हैं, तो दूसरी सारी अुन्नति और प्रगतिका क्या अर्थ होगा और वह सब किसके लिअे की जायगी?

अुस दिन दिल्लीमें प्रेस-कान्फरेन्सके सामने बोलते हुअे पंडित जवाहरलाल नेहरूने भारतके मानवोंके बारेमें कहा था, "प्रत्येक मानव अेक अनिश्चित अिकाओी है और भारतमें अैसी ३६ करोड़ अनिश्चित अिकाअियां हैं!"

www.vinoba.in

जनता राजनीतिज्ञ या अर्थशास्त्रीकी योजना या अमुक स्वरूपकी रचनाकी सामग्री नहीं है। बड़े दुःखकी बात है कि राष्ट्रीय कार्यके अिस पहलू पर कोअी ध्यान नहीं दिया जाता। श्री खेरने यह कह कर अिसकी अुपेक्षाकी टीका की है, "हर राज्यकी अपनी नीति होती है या नहीं होती है और राष्ट्र कुछ समयके लिअे जिन लोगोंके हाथमें सत्ता होती है अुनके विचारोंके अनुसार ही आगे बढ़ता या पीछे जाता है।" अिसलिअे अुन्होंने अिस आवश्यकता पर जोर दिया कि "हमें अपनी राष्ट्रीय जरूरतोंके अनुकूल राष्ट्रीय शिक्षाकी पद्धति खोज निकालनी चाहिये।"

सारी योजना और समाज-व्यवस्था राष्ट्रीय शिक्षण-पद्धतिकी मजबूत बुनियाद पर ही खड़ी हो सकती है और अुन्नति कर सकती है। तब हम केवल अपनी भौतिक संपत्तिके बल पर ही काम नहीं करेंगे, बल्कि मानसिक और नैतिक संपत्तियां भी सही ढंगसे हमारे साथ सहयोग करेंगी। तभी योजना नीचेसे आम जनताकी प्रतिभा और बुद्धिके अनुसार आगे बढ़ेगी, न कि अूपरसे देखने और संचालन करनेवाले योजनाकारों या सरकारके विचारोंके अनुसार, जो आम जनतासे अछूते रहकर आफिसके अेयर कंडीशन्ड कमरोंमें बैठकर योजनायें गढ़ते रहते हैं।

३–६–'५५ मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

जनशक्तिसे ही सधेगा

राजस्थानसे अेक कार्यकर्ता लिखते हैं:

"२० मअीसे २४ मअी तक हम लोग भूदानमें प्राप्त भूमि-वितरणके लिअे कोटड़ी तहसीलके गांवोंमें गये थे। ये गांव जागीरके थे। गांवोंमें जाने व वहांके लोगोंसे बातचीत करने पर ज्ञात हुआ कि राजस्थानमें जागीरें खत्म हो जानेके बावजूद गांववालों पर जागीरदारोंका आतंक ज्योंका त्यों है। काश्तकारोंको बेदखल किया जाता है तो गांववाले जागीरदारके खिलाफ शिकायत करने नहीं जाते और किसीने शिकायत करनेका साहस किया भी, तो जागीरदारके खिलाफ गांववाले गवाही देने नहीं जाते।

"अुधर सरकारी कर्मचारियों (पटवारियों) का यह हाल है कि जब वे हल्केमें जाते हैं तो जागीरदारोंके यहीं ठहरते हैं। वहीं मुकाम लगाते हैं। रसोड़ेसे खाना आ जाता है। और आसामियोंको बुलानेकी भी जरूरत पड़ी, तो जागीरदारके दरवाजे पर ही बुलाया जाता है। दूसरे शब्दोंमें जागीरदारोंकी सत्ता समाप्त हो जाने पर भी ये लोग अपनी सुविधाकी दृष्टिसे अिन जागीरदारोंकी हुकूमतको अिस रूपमें बरकरार रखनेकी चेष्टा करते हैं। फलस्वरूप जागीरदार गांववालोंको दबाये रखनेकी शह पाते हैं। अिस तरह लोगोंको अिनके खिलाफ शिकायत करनेका साहस ही नहीं होता।

"होना तो यह चाहिये कि जहां कहीं भी बेदखलीकी या अन्य कोअी शिकायत मालूम हो, वहां पटवारी अुच्च अधिकारीकी जानकारीमें स्वयं ला दे, न कि यह अितजार करे कि कोअी फरियादी आवे तो कार्यवाही करे। फरियादी तो आज यह मान बैठा है कि अपनेसे शक्तिशाली व्यक्तिके खिलाफ फरियाद करना, अपने-आप पर आफत मोल लेना है।"

और वे आशा करते हैं कि अधिकारी अिस पर ध्यान देंगे, तथा मुझसे पूछते हैं कि आखिर अिसका क्या हल है।

यह मसला पुराना है। अंग्रेजोंके राज्यकालसे चला आ रहा है। अिसके पहले हमारे हिन्दू या मुसलमान राज्यकालमें भी किसी न किसी रूपमें यह चालू था। आज हम अिसको न तो पसंद करते, न चाहते हैं; क्योंकि हम प्रजाशासन या लोकशाही चाहते हैं।

पुराने ढंगमें सरकारी कर्मचारी, कम-ज्यादा अंशमें खुदको राज्यसत्ताधारी या सरकार ही मानता था। हमारी भाषा भी 'सरकार' कह कर कअियोंको पुकारती थी। यह अुस जमानेकी तसवीर थी।

अिस सत्ताके आधार पर सरकारी कर्मचारी मान, अिज्जत और दर्जा पाता था, अितना ही नहीं, भेंट-सौगात भी लेता था। और अिसमें शायद ही कोअी बुराअी समझी जाती थी।

यह हाल अंग्रेजी राज्य-कालमें देहातोंमें तो बराबर बना रहा। अूपरके स्तरोंमें अिसने भले कुछ नया रूप पकड़ा हो। आज हम अिस हालतको पलटना चाहते हैं। अिसका अुपाय लोगोंके हाथमें ही है—हो सकता है। हां, स्वराज्य सरकार अमुक हद तक अिसमें मदद पहुंचा सकती है, जो पत्रलेखक चाहते हैं। यह मदद जरूर मिलनी चाहिये। वरना यह काम सही रूपमें तो अपने हकों और फर्जोंको समझनेवाली जनशक्तिसे ही होगा। भारतके नवनिर्माणमें यह अेक सबसे बड़ा और निहायत जरूरी काम है।

१३–६–'५५ मगनभाई देसाई

दियासलाअीका गृह-अुद्योग

भारत-सरकारने दियासलाअीके गृह-अुद्योगके संगठन और विकासके लिअे अ० भा० खादी और ग्रामोद्योग बोर्डको रु० ४,४३,८०० की रकम सौंपी है। यह अुद्योग नअी पैदा की हुअी 'घ' वर्गकी फैक्टरियोंकी श्रेणीमें आता है, जो रोजाना २५ ग्रोस दियासलाअीकी पेटियां तैयार करता है और अिसे चुंगीकरमें विशेष रिआयत दी गअी है, ताकि वह दियासलाअीकी बड़ी फैक्टरियोंकी होड़में खड़ा रह सके।

सरकार द्वारा मंजूर की गअी रकममें से रु० १,००,००० का अुपयोग दियासलाअी बेचनेके लिअे संगठित की गअी अुत्पादकोंकी सहकारी समितियोंकी कार्यकारी पूंजी (वर्किंग केपिटल)के तौर पर किया जायगा। और रु० २,२५,००० डेढ़ सौ सहकारी समितियों और दूसरी मान्य की हुअी संस्थाओंके बीच प्रति अिकाअी रु० १,५०० के हिसाबसे बांटे जायंगे, जो दियासलाअीके अुत्पादनको संगठित करनेका काम करती हैं। बाकी बचे हुअे रु० १,१८,००० से लोगोंको तालीम देनेके कार्यक्रमोंका खर्च चलाया जायगा।

अिस वक्त कलकत्ताके पास सोदपुरके खादी प्रतिष्ठानमें तालीमकी सुविधा अुपलब्ध है, जो तालीम, शोध और अुत्पादनका केन्द्र है। तालीम डॉ० सतीशचन्द्र दासगुप्ताके सीधे मार्गदर्शनमें दी जाती है, जिन्होंने दियासलाअी अुत्पादनकी पद्धतियों और प्रक्रियाओंमें नये सुधार किये हैं। तालीमका पाठ्यक्रम ३ से ४ माहका है और अेक साथ ४० अुम्मीदवारोंको तालीम देनेकी सुविधा है।

अिस साल सोदपुर केन्द्र १२० अुम्मीदवारोंको बांसकी चिपटियोंसे दियासलाअियां बनाने और मैचबाक्सके लिअे पेस्ट और कागजका अुपयोग करनेकी तालीम देनेकी आशा रखता है। चुने गये अुम्मीदवारोंको तीसरे दर्जेके आने-जानेके रेल-भाड़ेके अलावा विज्ञानके ग्रेज्युअेट हों तो ६० रुपये मासिक और दूसरे हों तो ४० रुपये मासिक छात्रवृत्ति भी दी जाती है। आम तौर पर राज्योंके खादी और ग्रामोद्योग बोर्डों द्वारा या दूसरी मान्य की हुअी संस्थाओं द्वारा भेजे गये अुम्मीदवारोंको ही भर्ती किया जाता है। लेकिन प्रवेशके लिअे भेजी गअी दूसरे लोगोंकी अर्जियों पर भी विचार किया जायगा।

www.vinoba.in

केन्द्रमें भर्ती करने और प्रत्येक पाठ्यक्रमकी तालीम देनेके लिअे कोअी निश्चित समय नहीं रखा गया है। जैसे जैसे अर्जियां आयेंगी और अुम्मीदवारोंका चुनाव किया जायगा, वैसे वैसे अुन्हें भर्ती किया जायगा, ताकि तालीमका कार्य लगातार चलता रहे और दियासलाअीका गृह-अुद्योग शुरू करनेकी अिच्छा रखनेवालोंको अुनकी सुविधानुसार तालीम मिलती रहे। अिसलिअे जो लोग दियासलाअी अुत्पादनकी तालीम लेना चाहते हैं, वे व्यवस्थापक, दियासलाअी गृह-अुद्योग, अ० भा० खादी ग्रामोद्योग बोर्ड, खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर (कलकत्ताके पास) को विस्तृत जानकारीके लिअे लिख सकते हैं।

अ० भा० खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड, सी० के० नारायणस्वामी
आर्मी अेण्ड नेवी बिल्डिंग,
बम्बअी — १
(अंग्रेजीसे)

टिप्पणियां

बेकार मनुष्य और बेकार यंत्र

अभी कुछ दिन हुअे दो-अेक समाचार जाननेमें आये, जिन्हें सुनकर देशकी प्रजाको चिन्ता हुअे बिना नहीं रह सकती। पहली खबर यह आयी कि नदी-बांधकी योजनाओं पर होनेवाले खर्चके अनुमान फिर गलत मालूम हुअे हैं और अुनमें करोड़ों रुपयोंकी वृद्धि आवश्यक होगी। यह वृद्धि ५–१० प्रतिशत नहीं, ३०–४० प्रतिशतसे भी अूपर है। अनुमानमें कभी कभी नहीं, हमेशा वृद्धि ही निकला करे और वह भी अितनी ज्यादा, तो अिसे क्या कहा जाय? अिससे तो मालूम होता है कि अिन कामोंको योजना कहनेमें कोअी अर्थ नहीं, अंदाज भी नहीं कह सकते। 'लाखोंके लेन-देन' की बात कही जाती है, लेकिन यहां तो 'करोड़ोंका अन्दाज' कूता गया है।

दूसरी खबर यह मिली है कि अेक सरकारी समितिने कुछ बांध-योजनाओंका अुनके स्थान पर जाकर निरीक्षण किया तो यह मालूम हुआ कि ४८% यंत्र बेकार पड़े हुअे हैं; कारण अुन यंत्रोंके कुछ भाग, जो कम पड़ते हैं, अप्राप्य हैं। यह कैफियत तो अुन जगहोंकी है जहां समिति गअी थी। परन्तु जिन अनेक स्थानोंमें वह नहीं गअी, वहां क्या हो रहा होगा वह राम जानें। यंत्र लाये गये, जिससे मनुष्य-बल बेकार बना; अब यंत्र बेकार पड़े हैं तो सवाल यह अुठता है कि अुनमें पैसा लगानेका क्या अर्थ रहा? क्या अिसका कारण आवश्यकतासे ज्यादा अुतावली और अुसके फलस्वरूप योजनाके काममें धांधली पैदा होना नहीं है? कमेटी कहती है कि अिन नये यंत्रोंसे काम लेना हमारे अिंजीनियरोंको अभी आता नहीं है। तो ये यंत्र मंगवाये क्यों और अैसी योजनायें बनायी क्यों? सरकारके जवाबदार आदमियोंको यह सब देख-समझकर कामकी गति अिस तरह नियंत्रित कर देनी चाहिये जो चल सके। और खोटे अंदाज नहीं चलने देना चाहिये। यह सब देखकर अैसा लगता है कि सारे देशमें यदि अिन बड़ी-बड़ी योजनाओंके बदले छोटे छोटे काम शुरू किये गये होते और यह पैसा बेकार यंत्रोंके बजाय अुनमें लगाया गया होता, तो कितना अच्छा होता। वैसा होता तो पैसा कम लगता, अमरीकी मददके जालमें न फंसना पड़ता और जितना पैसा हम बचाकर खर्च करते, वह सब अिन सावधानीसे चुने हुअे समझे-बूझे कामोंमें लगनसे पूरी तरह फलप्रद सिद्ध होता। हुआ सो हुआ, अभी भी स्थिति सुधर जाय तो अच्छा।

१४–५–'५५ म० प्र०
(गुजरातीसे)

दूषित पैसा

'टाअिम्स ऑफ अिण्डिया' अपने ता० ८–६–'५५ के अंकमें बंगलोरकी ७ जूनकी यह खबर देता है:

"मैसूर सरकारने शब्दव्यूह प्रतियोगिता पर नियंत्रण लगानेवाले प्रस्तावित कानूनके विषयमें केन्द्रीय सरकारको अपने विचार बता दिये हैं। . . . कानूनमंत्री श्री अे० जी० रामचन्द्रारावसे जब पूछा गया कि क्या वे शब्दव्यूहों पर प्रतिबन्ध लगानेके पक्षमें हैं, तो अुन्होंने अुत्तर दिया कि अिस सुझावको मान लिया जाय तो दूसरी कअी बातों पर, जिनमें घुड़दौड़ भी शामिल है, प्रतिबंध लगाना पड़ेगा।"

यह जानकर खुशी होती है कि मंत्री महोदय अपने राज्यकी नीतियोंका विचार करनेमें युक्तिसंगत होनेका प्रयत्न करते हैं। प्रश्न यह है कि अिन अनुचित मानी हुअी बातों पर नियंत्रण या प्रतिबंध लगाया जाना चाहिये या नहीं? लेकिन अिस विषयमें मंत्री महोदयके विचार जानना ज्यादा ठीक होगा। और अिस संबंधमें अुन्होंने अखबारी रिपोर्टके अनुसार अेक चौकानेवाली बात कही है। जैसा कि अूपरकी खबरके अन्तमें कहा गया है:

"अुन्होंने कहा कि 'अिन बुरी बातोंको कुछ समयके लिअे हमें बरदाश्त करना होगा', ताकि अच्छे अुद्देश्योंके लिअे पैसा प्राप्त किया जा सके।"

दूसरी बहुतसी बुरी बातें भी हैं जो 'अच्छे' (?) अुद्देश्योंकी सिद्धिमें लगाये जाने लायक दूषित पैसा देती हैं। क्या मंत्री महोदय यहां भी युक्तिसंगत बनेंगे? लेकिन हमें तो यह सिखाया गया है कि दूषित पैसा अपने-आपमें अितनी बुरी चीज है कि अुसे छोड़ देना ही कहीं अच्छा है। अिसलिअे मंत्री महोदयके अिस सिद्धान्तसे सहमत होना कठिन है कि अैसी बुराअीसे भला परिणाम निकल सकता है, जो मनुष्य द्वारा जानबूझकर लालचके कारण चलने दी जाती है।

१२–६–'५५ म० प्र०
(अंग्रेजीसे)

भावी भारतकी अेक तसवीर

[दूसरी आवृत्ति]

किशोरलाल मशरूवाला

कीमत १–०–० डाकखर्च ०–५–०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–१४

विषय–सूची

		पृष्ठ
भूदानमें साध्य और साधन	जे० सी० कुमारप्पा	१२१
जगतमें शांति कैसे हो?	विनोबा	१२२
२५०० वीं बुद्ध-जयन्ती	मगनभाई देसाई	१२३
विश्वशांतिकी राजनीति	मगनभाई देसाई	१२३
हमारा सबसे बड़ा आधारभूत अुद्योग	मगनभाई देसाई	१२४
विविध विचार	मगनभाई देसाई	१२५
शिक्षणकी जगह फौजी तालीम	मगनभाई देसाई	१२६
हमारी सबसे बड़ी प्राकृतिक संपत्ति	मगनभाई देसाई	१२६
जनशक्तिसे ही सधेगा	मगनभाई देसाई	१२७
दियासलाअीका गृह-अुद्योग	सी० के० नारायणस्वामी	१२७
टिप्पणियां:		
बेकार मनुष्य और बेकार यंत्र	म० प्र०	१२८
दूषित पैसा	म० प्र०	१२८

www.vinoba.in